

रा.प्र.प्र.स. ५२/१६ पुणेराज ५/१०

२६.३.२१

पत्रावली पैसा ३३) प्रतीपत्र ५

३-१६ आलेखना ३३) बाल-बाल आवादी  
लगवाई गई। प्रगत के कामों के  
साहित्य रहे हैं। कृपा, प्रतीपत्र के प्रगत  
काम सापटी व प्रगत पैसा के खातिर  
क्रिया जाय है। पत्रावली पैसा शुभकर है।  
नैसर्ग से प्रगत होकर साहित्य प्रगत है।



अथर कलक्टर, नागौर